''मीठे बच्चे – बाप आये हैं तुम बच्चों को कुम्भी पाक नर्क से निकालने के लिए, तुम बच्चों ने बाप को निमन्त्रण भी इसलिए दिया है''

प्रश्नः- तुम बच्चे बहुत बड़े ते बड़े कारीगर हो – कैसे? तुम्हारी कारीगरी क्या है?

उत्तरः- हम बच्चे ऐसी कारीगरी करते हैं जो सारी दुनिया ही नई बन जाती है, उसके लिए हम कोई ईट या तगारी आदि नहीं उठाते हैं लेकिन याद की यात्रा से नई दुनिया बना देते हैं। हमें खुशी है कि हम नई दुनिया की कारीगरी कर रहे हैं। हम ही फिर ऐसे स्वर्ग के मालिक बनेंगे।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) बाप जो सुनाते हैं उसे अच्छी तरह सुनकर फिर उगारना है। दुनियावी बातों में अपना समय नहीं गँवाना है।

2) बाप की याद में आंखें बन्द करके नहीं बैठना है। श्रीकृष्ण की राजधानी में आने के लिए पढ़ाई अच्छी रीति पढ़नी है।

वरदानः- परमात्म लव में लीन होने वा मिलन में मग्न होने वाले सच्चे स्नेही भव

स्नेह की निशानी गाई जाती है - कि दो होते भी दो न रहें लेकिन मिलकर एक हो जाएं, इसको ही समा जाना कहते हैं। भक्तों ने इसी स्नेह की स्थिति को समा जाना वा लीन होना कह दिया है। लव में लीन होना - यह स्थिति है लेकिन स्थिति के बदले उन्होंने आत्मा के अस्तित्व को सदा के लिए समाप्त होना समझ लिया है। आप बच्चे जब बाप के वा रूहानी माशूक के मिलन में मग्न हो जाते हो तो समान बन जाते हो।

स्लोगनः- अन्तर्मुखी वह है जो व्यर्थ संकल्पों से मन का मौन रखता है।